International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 07 | July - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करने में उपलब्धि अभिप्रेरणा की उपयोगिता का अध्ययन

मोहन लाल (शोधार्थी)
डॉ. सुमित्रा देवी (शोध निर्देशक)
शिक्षा विभाग, एस.के.डी. विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

सार:

शिक्षण की प्रक्रिया शिक्षण अधिगम के द्वारा पूर्ण होती है। शिक्षक द्वारा जो शिक्षण प्रक्रिया अपनाई जाती है और छात्र उसके प्रति जो अनुक्रिया करते हैं उससे शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया संपूर्ण होती है। उपलब्धि अभिप्रेरणा का आधारभूत लक्ष्य उपलब्धि होता है। जब व्यक्ति उपलब्धि के लिए कोई कार्य करता है तो उसे उपलब्धि अभिप्रेरणा द्वारा प्रेरित माना जाता है। उपलब्धि अभिप्रेरणा से तात्पर्य एक ऐसे अभिप्रेरक से होता है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्य को इस प्रकार करता है कि उसे अधिक से अधिक सफलता मिल सके। प्रत्येक व्यक्ति उपलब्धि प्राप्त करने की भावना से प्रेरित होता है तथा कुछ न कुछ प्राप्त करने की इच्छा रखता है। किसी क्षेत्र या विषय में उपलब्धि प्राप्त करने में जो प्रेरणा कार्य करती है वह उपलब्धि अभिप्रेरणा है। यह एक आंतरिक शक्ति है जो व्यक्ति को किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। वास्तव में यह क्यों के प्रश्न का उत्तर देती है व्यक्ति उच्च पद क्यों पाना चाहता है? बालक वस्तुओं का संग्रह क्यों करना चाहता है? जैसे प्रश्नों का उत्तर उपलब्धि अभिप्रेरणा से संबंधित है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उपलब्धि अभिप्रेरणा का व्यापक प्रभाव छात्रों के जीवन में प्रदर्शित होता है। इसलिए छात्रों में उपलब्धि अभिप्रेरणा का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है।

मुख्य बिंदु:
शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, नवाचार, उपलब्धि अभिप्रेरणा, उपयोगिता

प्रस्तावना:

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी आंतरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करता है। शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण की प्रक्रिया शिक्षण अधिगम के द्वारा पूरी होती है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को ज्ञान, कौशल तथा अभिरुचियों को सीखने में सहायता करता है अर्थात शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य है, दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना। अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी किसी परिस्थिति में प्रतिक्रिया के कारण नए प्रकार के व्यवहार को ग्रहण करता है जो किसी सीमा तक प्राणी के सामान्य व्यवहार को प्रभावित करता है। अतः अधिगम अनुभव के परिणाम स्वरूप प्राणी के व्यवहार में परिवर्तन है जो प्राणी द्वारा कुछ समय के लिए धारण किया जाता है। इस प्रकार से अधिगम अनुभव और प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है। अतः शिक्षक द्वारा जो शिक्षण प्रक्रिया अपनाई जाती है और छात्र उसके प्रति जो अनुक्रिया करते हैं उससे शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया संपूर्ण होती है। किसी निश्चित समयावधि में किसी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा एक या अनेक विषयों में छात्रों के ज्ञान व समझ में हुए परिवर्तन को उपलब्धि कहते हैं।

अभिप्रेरणा एक ऐसी परिकल्पनात्मक प्रक्रिया है जो प्राणी व्यवहार के निर्धारण व संचालन से संबंध रखती है। व्यवहार को अनुप्रेरित अथवा सक्रिय बनाए रखने वाले कारकों को अभिप्रेरणात्मक कारक कहा जाता है। अभिप्रेरणा शब्द प्राणी की सभी प्रकार की अभिप्रेरणात्मक क्रियाओं को इंगित करता है। किसी क्षेत्र या विषय में उपलब्धि प्राप्त करने में जो प्रेरणा कार्य

करती है, वह उपलब्धि अभिप्रेरणा है अर्थात सफलता प्राप्त करने तथा उपयोगी वस्तु प्राप्त करने की शक्ति प्रत्येक व्यक्ति में पाई जाती है। इसी इच्छा शक्ति को उपलब्धि अभिप्रेरणा की संज्ञा दी जाती है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा एक प्रमुख सामाजिक अभिप्रेरणा है। यह जन्मजात न होकर व्यक्ति द्वारा अर्जित या सीखी गई होती है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसका विभिन्न प्रभाव दिखाई पड़ता है। छात्र जीवन में तो इसका प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि के रूप में प्रत्यक्षतः दृष्टिगोचर होने लगता है। मनोवैज्ञानिकों के विचार से सामान्यतः उपलब्धि अभिप्रेरणा जीवन के किसी भी क्षेत्र में उच्चतम स्तर प्राप्त करने के लिए सक्रिय करती है। प्रेरणा सीखने का महत्वपूर्ण अंग है। प्रेरणाहीन क्रिया को सीखने में व्यक्ति रुचि नहीं लेता है। जेम्स ने उपलब्धि अभिप्रेरणा का उल्लेख युद्धोत्साह और महत्वाकांक्षा से पूर्ण आवेग के रूप में किया है— "सफलता प्राप्त करने अथवा वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रवृत्ति को उपलब्धि अभिप्रेरणा कहते हैं।"

एटकिंसन तथा फेदर (1966) ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है कि यह सफलता प्राप्त करने या उपलब्धि के लिए व्यक्ति की वांछित रूप से स्थायी प्रवृत्ति है। यह अभिप्रेरक तब तक सुशुप्त रहते हैं जब तक कि व्यक्ति को अपने परिवेश से यह संकेत न मिल जाए कि उपलब्धि को कार्य या निष्पादन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। एटकिंसन ने अपने अध्ययन के परिणाम के आधार पर यह विचार व्यक्त किया है कि उपलब्धि के अभिप्रेरक वाले व्यक्ति उनमें कार्यों को करना पसंद करते हैं जिनमें उन्हें उच्चतर स्तर प्राप्त करने का अवसर मिल सके। वास्तव में उपलब्धि अभिप्रेरणा एक आंतरिक शक्ति है जो प्राणी को किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य करने लिए प्रेरित करती है। इसे प्रत्यक्ष निरीक्षण के द्वारा देखा जाना संभव नहीं है। यह एक अदृश्य क्षमता है जिसके प्रभाव का निरीक्षण करना ही संभव हो पाता है।

प्रत्येक व्यक्ति उपलब्धि प्राप्त करने की भावना से प्रेरित होता है तथा कुछ न कुछ प्राप्त करने की इच्छा रखता है। शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में किसी भी प्रकार की प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। जब तक बालक को सीखने के लिए प्रेरित नहीं किया जाता है तब तक उसे कुछ भी नहीं सिखाया जा सकता। वास्तव में यह क्यों के प्रश्न का उत्तर देती है— जैसे व्यक्ति उच्च पद क्यों पाना चाहता है? बालक वस्तुओं का संग्रह क्यों करना चाहता है? जैसे प्रश्नों का उत्तर उपलब्धि अभिप्रेरणा से संबंधित है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा का आधारभूत लक्ष्य उपलब्धि होता है। जब व्यक्ति उपलब्धि के लिए कोई कार्य करता है तो उसे उपलब्धि अभिप्रेरणा द्वारा प्रेरित माना जाता है। हम जानते हैं कि अभिप्रेरकों (Motive) को विभिन्न वर्गों में बांटा जा सकता है। जब कोई व्यक्ति विपरीत लिंग के साथ संबंध रखने का प्रयास करता है तो कहा जा सकता है कि उसका अभिप्रेरक काम (Sex) है। यदि कोई विद्यार्थी कक्षा का मॉनिटर बनना चाहता है या फुटबॉल की टीम का कैप्टन बनना चाहता है तो इसका अर्थ है कि शक्ति प्राप्त करना ही उसका अभिप्रेरक है। इसी प्रकार स्कूल में अपने कार्य को सुधारने की इच्छा या अच्छा ग्रेड प्राप्त करने की इच्छा, इंजीनियर बनने की इच्छा आदि उपलब्धि अभिप्रेरकों के अंतर्गत आते हैं।

उपलब्धि अभिप्रेरक से तात्पर्य एक ऐसे अभिप्रेरक से होता है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्य को इस प्रकार करता है कि उसे अधिक से अधिक सफलता मिल सके। म्यू, फील्ड व फील्ड (1972) के अनुसार उपलब्धि अभिप्रेरक से तात्पर्य श्रेष्ठता के खास स्तर को प्राप्त करने की इच्छा से होता है। अतः हमारी उपलब्धि अभिप्रेरणा के पीछे उपलब्धि अभिप्रेरकों का ही हाथ होता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व:

उपलब्धि अभिप्रेरणा का मुख्य अभिप्रेरक है। इसका प्रभाव छात्रों के ऊपर तीव्रता पूर्वक पड़ता है। यह एक सामान्य सत्य है कि छात्रों के उपलब्धि फलांकों पर सफलता एवं असफलता की प्रत्याशा का प्रभाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिक प्रयोगों से जो परिणाम प्राप्त होते हैं उनके अनुसार उपलब्धि अभिप्रेरणा व्यक्ति को अपने जीवन में उच्चतम स्तर प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित करती है। उच्च और निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा वाले छात्र-छात्राओं के चिंतन और कार्य में काफी विभिन्नता देखने को मिलती है। उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा वाले छात्र अपनी सफलता का कारण अपनी योग्यता तथा प्रयास को मानते हैं एवं

विशेषज्ञों के साथ काम करना पसंद करते हैं। निम्न उपलब्धि अभिप्रेरणा वाले छात्र अपनी असफलता का कारण अपने प्रयासों को न मानकर अपनी अयोग्यता को मानते हैं। विद्यालय में जो विद्यार्थी प्रबल उपलब्धि प्रेरणा वाले होते हैं वे अपने मित्रों की अपेक्षा अध्यापकों या विशेषज्ञों के साथ काम करना अधिक पसंद करते हैं। ऐसे विद्यार्थी उनमें कार्यों को करना चाहते हैं जिनका उत्तरदायित्व स्वयं उनके ऊपर होता है।

एटकिंसन के अनुसार— यदि बालक सफलता प्राप्त करने में निश्चित है तो सफलता की आत्मनिष्ठ संभावना अधिक होगी, सफलता की प्रत्याशा यदि कम है तो सफलता की संभावना कम होगी और यदि बालक सफलता के विषय में अनिश्चित है तो सफलता की संभावना पचास प्रतिशत मानी जाती है।

मनोवैज्ञानिकों ने अनेक अध्ययन करके यह सिद्ध किया है कि उपलब्धि अभिप्रेरक का संबंध बचपन में माता-पिता द्वारा दिए जाने वाले स्वतंत्रता प्रशिक्षण से काफी है। इस प्रशिक्षण से तात्पर्य बच्चों में माता-पिता द्वारा स्वतंत्र रूप से भिन्न-भिन्न तरह के कार्यों को करने देने पर जोर डालने से होता है। कुछ माता-पिता ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को काफी छोटा या बच्चा समझकर उनके कार्यों को भी स्वयं कर देते हैं। परंतु कुछ माता-पिता ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को उनके अधिकतर कार्य उन्हें स्वयं करने की पूर्ण स्वतंत्रता देते हैं और उसे पूरा करने में भिन्न-भिन्न तरह का प्रोत्साहन भी देते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि पहले तरह के बच्चों का स्वतंत्रता प्रशिक्षण नहीं हो पाया जबकि दूसरे तरह के बच्चों का स्वतंत्रता प्रशिक्षण हो पाया है। जिन बच्चों को स्वतंत्रता प्रशिक्षण काफी दिया जाता है उनमें वयस्क होने पर उपलब्धि अभिप्रेरक भी अधिक होते पाया जाता है।

शिक्षा में उपलब्धि अभिप्रेरणा का व्यापक प्रभाव छात्रों के जीवन में प्रदर्शित होता है। यदि कहा जाए कि उपलब्धि अभिप्रेरक ही छात्रों के जीवन और व्यक्तित्व के निर्माण को आधार प्रदान करते हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जब छात्र परीक्षा में उत्तीर्ण होता है तो इससे उसकी आकांक्षा स्तर में वृद्धि होती है और वह अधिक उत्साह के साथ आगे अधिगम के लिए प्रयासरत होता है परंतु असफल होने पर उसमें अरुचि पलायन, हतोत्साह आदि उत्पन्न होते हैं। परीक्षाकाल में छात्र सामान्यतः परीक्षा उपलब्धि के लिए अधिक चिंतित पाए जाते हैं परंतु अत्यधिक उच्च स्तर की चिंता उपलब्धि में सहायक नहीं होती।

उपलब्धि अभिप्रेरक से तात्पर्य एक ऐसे अभिप्रेरक से होता है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्य को इस प्रकार करता है कि उसे अधिक से अधिक सफलता मिल सके। सेंटरोक (2000) के अनुसार— कुछ करने की श्रेष्ठता के मानद पर पहुंचने की तथा विशिष्टता प्राप्त करने के प्रयास की इच्छा को उपलब्धि आवश्यकता कहा जाता है।

जिन व्यक्तियों में उपलब्धि अभिप्रेरक अधिक होता है, वे अपनी जिंदगी में अधिक से अधिक उच्च स्तर की सफलता प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। उपलब्धि अभिप्रेरक सभी व्यक्तियों में समान नहीं होता है। किसी में यह अभिप्रेरक कम होता है।

मनोवैज्ञानिकों ने अनेक अध्ययन करके यह दिखलाया है कि उपलब्धि अभिप्रेरक का संबंध बचपन में माता-पिता द्वारा स्वतंत्र रूप से भिन्न-भिन्न तरह के कार्यों को करने देने पर जोर डालने से होता है। कुछ माता-पिता ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को काफी छोटा या बच्चा समझकर उनके कार्यों को भी यथासंभव स्वयं कर देते हैं। परंतु कुछ माता-पिता ऐसे होते हैं जो अपने बच्चों को उनके अधिकतर कार्य उन्हें स्वयं करने की पूर्ण स्वतंत्रता देते हैं और उसे पूरा करने में भिन्न-भिन्न तरह का प्रोत्साहन भी देते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि पहले तरह के बच्चों का स्वतंत्रता प्रशिक्षण नहीं हो पाया जबकि दूसरे तरह के बच्चों का स्वतंत्रता प्रशिक्षण हो पाया है। जिन बच्चों को स्वतंत्रता प्रशिक्षण काफी दिया जाता है, उनमें वयस्क होने पर उपलब्धि अभिप्रेरक भी अधिक होते पाया गया है।

उपलब्धि अभिप्रेरक को मैकक्लीलैंड (1953) तथा उनके सहयोगियों द्वारा इसे मापा भी गया। बाद में एटकिंसन (1964) तथा होयेंगा एवं होयेंगा (1984) द्वारा भी उपलब्धि आवश्यकता का अध्ययन किया गया और इन लोगों द्वारा निम्नांकित निष्कर्ष पर पहुंचा गया—

1. ऐसे व्यक्ति जिनमें उपलब्धि अभिप्रेरक अधिक होता है, साधारण कठिनाई वाले कार्य को करना अधिक पसंद करते हैं, क्योंकि इस पर सफलता निश्चित होती है।

2. ऐसे व्यक्ति जिनमें उपलब्धि अभिप्रेरक अधिक होता है, वे ऐसे कार्य को करना अधिक पसंद करते हैं, जिनके आधार पर उनकी तुलना अन्य व्यक्तियों के साथ आसानी से की जा सके।

3. अधिक उपलब्धि अभिप्रेरक वाले व्यक्ति ऐसे कार्यों को करना अधिक पसंद करते हैं जिनके द्वारा उनके व्यक्तिगत गुणों जैसे बुद्धि आदि की अभिव्यक्ति हो।

4. जब अधिक उपलब्धि अभिप्रेरक वाले व्यक्ति किसी एक कार्य में सफल होते हैं तो वे अपनी इस सफलता को ध्यान में रखते हुए अपनी आकांक्षा के स्तर को धीरे-धीरे ऊंचा करते हैं।

5. अधिक उपलब्धि अभिप्रेरक वाले व्यक्ति उन परिस्थितियों में अधिक कार्य करना पसंद करते हैं जिनके परिणाम पर उन्हें नियंत्रण काफी होता है ताकि वे निश्चित रूप से यह समझ सकें कि उन्हें सफलता मिलेगी या नहीं।

प्रभावित करने वाले कारक:

उपलब्धि प्रेरणा के संबंध में यह कथन महत्वपूर्ण है कि इस प्रेरक को कौन-कौन से कारक प्रभावित करते हैं? वास्तव में इन कारकों का संबंध वातावरण से होता है। इसके अतिरिक्त उपलब्धि प्रेरणा को निम्न कारक भी प्रभावित करते हैं—

1. **वातावरण का प्रभाव:**
अध्ययनों से ज्ञात होता है कि वातावरण के प्रभाव के कारण तीन से साढ़े तीन वर्ष की आयु में इस प्रेरक का विकास होने लगता है। कीगन तथा मॉस (1962) एवं हेडहॉल्म (1962) ने इस विचार का समर्थन किया है।

2. **संस्कृति का प्रभाव:**
अध्ययनों से पता चलता है कि उपलब्धि प्रेरक पर संस्कृति का भी प्रभाव पड़ता है। हैबर (1941) ने भारतीय समाज एवं अमेरिकी समाज का अध्ययन किया तथा पाया कि अमेरिकी समाज का उपलब्धि प्रेरणा स्तर अधिक ऊंचा था।

3. **व्यवसाय का प्रभाव:**
मेस तथा कान (1961) ने अपने अध्ययनों से ज्ञात किया कि उपलब्धि प्रेरणा को व्यवसाय भी प्रभावित करता है। अध्ययनों में देखा गया कि उच्च आकांक्षा तथा उच्च व्यवसाय वाले पिता के बच्चों में उच्च उपलब्धि प्रेरणा पाई जाती है।

4. **पालन-पोषण का प्रभाव:**
उपलब्धि प्रेरणा के विकास पर बच्चों के पालन-पोषण का भी प्रभाव पड़ता है। एल्स्टोबेक (1958) के अनुसार बच्चों की इस प्रेरणा के विकास में माता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। मैक्लीलैंड तथा विंटर बटम (1955) के अनुसार जिन बच्चों को स्वतंत्रता प्रशिक्षण दिया जाता है उन बच्चों में यह प्रेरणा उच्च पाई जाती है जो बच्चे माता पर अधिक आश्रित रहते हैं उन बच्चों में इस प्रेरणा का विकास सीमित हो जाता है।

प्रभावित होने वाले कारक:

1. **उपलब्धि प्रेरणा तथा आर्थिक विकास:**
उपलब्धि प्रेरणा का प्रभाव न केवल व्यक्ति पर बल्कि समूह व समाज पर भी पड़ता है। अध्ययनों से पता चलता है कि व्यक्ति व समाज की उपलब्धि प्रेरणा तथा उसके आर्थिक विकास में गहरा संबंध होता है। जिस व्यक्ति या समाज की उपलब्धि प्रेरणा प्रबल होती है उस समाज की आर्थिक स्थिति भी प्रबल होती है। मैक्लीलैंड (1958) ने बताया कि समाज के आर्थिक विकास के लिए उपलब्धि प्रेरणा का उच्च होना आवश्यक है। एरोल्सन (1958) ने ज्ञात किया कि किसी समाज के आर्थिक विकास पर उस समाज के लोगों के उपलब्धि प्रेरणा का गहरा प्रभाव पड़ता है।

2. **आकांक्षा स्तर:**

उपलब्धि प्रेरणा का आकांक्षा स्तर पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। उपलब्धि प्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर आपस में संबंधित हैं। जिन लोगों का आकांक्षा स्तर आपस में संबंधित हैं, उनका आकांक्षा स्तर ऊंचा होता है तथा उनकी उपलब्धि प्रेरणा भी उच्च होती है और ऐसे लोग कठिन मेहनत करके ऊंचे लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसे लोगों में जोखिम उठाने की भी क्षमता पाई जाती है। सैंफोर्ड (1961) के अनुसार, इसमें संदेह नहीं है कि यदि किसी समाज में उच्च उपलब्धि वाले व्यक्ति अधिक हों तो वह समाज वांछित रूप से पुष्ट आर्थिक विकास प्रदर्शित करेगा। इस कथन से स्पष्ट होता है कि उपलब्धि प्रेरणा से व्यक्ति, समाज या समूह उसका आर्थिक स्तर तथा आकांक्षा स्तर सभी प्रभावित होते हैं।

प्रत्येक बालक अपने विशिष्टजनों को देखकर उनके जैसा बनने का प्रयास करता है तथा उनके समान ही उपलब्धि ग्रहण करने को प्रेरित होता है।

3. **विद्यालय उपलब्धि:**

मैक्लीलैंड (1938) का यह कथन उपयुक्त प्रतीत होता है कि बालक को जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती है, उसकी अभिप्रेरणा उसी स्तर की होती है, इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बालक शिक्षकों से तादात्म्य स्थापित करके शिक्षा ग्रहण करते हैं और उच्च उपलब्धि की आशा रखते हैं। बालक आकांक्षा स्तर को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं और अपने जीवन को उन्नत बनाने का प्रयास करते देखे जाते हैं। एटकिंसन (1964) के अनुसार उपलब्धि प्रेरणा की सहायता से बालक व्यवहार की दिशा, तीव्रता और निरंतरता पाने का प्रयास करते हैं। कक्षा में शिक्षक अपने अनुभव से बच्चों में उत्साहना या सक्रियता का विकास करते हैं। शिक्षक बच्चों में आकांक्षा स्तर को बढ़ाते हैं, जिससे वह अधिक से अधिक कार्य करने हेतु प्रेरित होता है उसे प्रोत्साहित करते हैं।

4. **प्रतियोगिता:**

प्रतियोगिता की भावना बच्चों में उपलब्धि प्रेरणा को प्रभावित करती है, शिक्षक अपने ज्ञान व अनुभव के माध्यम से बच्चों में अधिक से अधिक प्रेरणा प्रदान करता है और उन्हें नए कार्य करने हेतु प्रेरित करता है जिससे उनमें प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न हो जाती है। हारलॉड ने प्रतियोगिता के प्रभाव का अध्ययन किया तथा पाया कि जिन बच्चों को प्रतियोगिता हेतु प्रोत्साहित किया था उस समूह ने अच्छे अंक प्राप्त किए।

5. **प्रगति का ज्ञान:**

प्रगति का ज्ञान छात्रों में उपलब्धि प्रेरणा को बढ़ाता रहता है और छात्र अति आत्मविश्वास के साथ ज्ञान ग्रहण करते रहते हैं। थार्नडाइक तथा जड के अध्ययन प्रकट करते हैं कि प्रगति का ज्ञान होते रहने से छात्रों में उपलब्धि प्रेरणा में वृद्धि पाई गई। विद्यालय में छात्र उपलब्धि प्राप्त करने हेतु अग्रसर रहता है और अपनी आवश्यकताओं के प्रति उत्सुक रहता है।

6. **आवश्यकताओं का ज्ञान:**

हारलॉड के शब्दों में "बालक की मुख्य आवश्यकताएं उसके सीखने में उद्दीपक का कार्य करती हैं।"

7. **कक्षा का वातावरण:**

कक्षा का वातावरण छात्रों की उपलब्धि बढ़ाने में अधिक सक्रिय भूमिका निभाता है। जैसा कक्षा का वातावरण होगा वैसी ही छात्रों की उपलब्धि होगी। कक्षा का वातावरण छात्रों के किसी एक पहलू को प्रभावित नहीं करता बल्कि संपूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। फ्रेंडसन के शब्दों में, एक उत्तम अध्यापक प्रभावी प्रेरणा हेतु शिक्षण सामग्री से युक्त सार्थक तथा सतत रूप से परिवर्तनशील कक्षा के वातावरण पर निर्भर करता है।

8. **सफलता तथा असफलता:**

विद्यालय में कुछ छात्र उपलब्धि प्राप्त करते हैं तो कुछ छात्र उपलब्धि प्राप्त करने में असफल रहते हैं। कक्षा उपलब्धि को उच्च रखने हेतु शिक्षक के साथ-साथ संपूर्ण स्टाफ सहायक होता है जो छात्र की उपलब्धि प्रेरणा को बढ़ाता है।

9. **परिचर्चा एवं सम्मेलन:**

छात्रों की उपलब्धि को बढ़ाने हेतु सम्मेलन तथा परिचर्चा सहायक होती है। ब्रियल्स के अध्ययनों से ज्ञात होता है कि "विद्यार्थी समूह में अधिक सक्रिय रहते हुए ज्ञान प्राप्त करते हैं।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि स्कूल की उपलब्धि हेतु छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों, प्रधानाध्यापक तथा संपूर्ण विद्यालय स्टाफ सहायक होता है जो छात्रों में उपलब्धि प्रेरणा को अग्रसर करता है, बढ़ाता है और नए कार्यों को करने हेतु प्रेरित करता है।

उच्च अभिप्रेरणा से युक्त व्यक्तियों की विशेषताएं:

1. ऐसे व्यक्ति साधारण कठिनाई वाले कार्य को करना अधिक पसंद करते हैं क्योंकि इस पर सफलता निश्चित होती है।
2. ऐसे व्यक्ति उन कार्यों को करना अधिक पसंद करते हैं जिनके आधार पर उनकी तुलना अन्य व्यक्तियों के साथ की जा सके।
3. ऐसे व्यक्ति उन कार्यों को करना अधिक पसंद करते हैं जिनके द्वारा उनके व्यक्तिगत गुणों जैसे-बुद्धि आदि की अभिव्यक्ति हो।
4. ऐसे व्यक्ति जब किसी एक कार्य में सफल होते हैं तो वे अपनी सफलता को ध्यान में रखते हुए अपनी आकांक्षा के स्तर को धीरे-धीरे ऊंचा करते हैं अर्थात इनमें आकांक्षा स्तर वांछित रूप से ऊंचा होता है।
5. ऐसे व्यक्ति उन परिस्थितियों में अधिक कार्य करना पसंद करते हैं जिनके परिणाम पर उन्हें नियंत्रण काफी होता है ताकि वे निश्चित रूप से यह समझ सकें कि उन्हें सफलता मिलेगी या नहीं।
6. ऐसे व्यक्ति उपलब्धि से संबंधित कार्य में अधिक दृढ़ता दिखाते हैं।
7. ऐसे व्यक्ति अपनी सफलता से अत्यधिक प्रसन्नता प्राप्त करते हैं।
8. ये कार्य में अधिक निपुणता दिखाते हैं और उनकी कार्य पूर्णता का स्तर ऊंचा होता है।
9. दूसरों से आगे बढ़ने की इच्छा उनमें सशक्त होती है और भौतिक सफलता के क्षेत्र में वे अत्यधिक चमकते हैं।
10. ऐसे व्यक्तियों में सफलता प्राप्त करने की चिंता अत्यधिक होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2008): शिक्षा मनोविज्ञान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. मंगल, एस.के. (2008): शिक्षा मनोविज्ञान, प्रिंटिस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
3. माथुर, एस.एस. (2007): शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. सिंह, अरुण कुमार एवं सिंह, आशीष कुमार (2012): आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक प्रा.लि., 41 यू.ए., बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007।
5. भटनागर, ए.बी., डॉ. भटनागर, मीनाक्षी (2007): अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

6. पांडेय, रामशकल (2007): शिक्षा मनोविज्ञान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

7. शर्मा, आर.ए. (2007): शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

8. वालिया, जे.एस. (2007): शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान, अहमदपाल पब्लिशर्स, एन.एन. 11, गोपाल नगर, जालंधर (पंजाब)।

9. गुप्ता, एस.पी. (2008): डॉ. गुप्ता, अलका, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

10. लाल एवं पलोड़ (2007): अधिगमकर्ता का मनोविज्ञान एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।